

भारतीय नैतिक संस्कृति

डॉ. राजेश त्रिपाठी

योग विभाग

गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय,
बांसवाड़ा (राज.)

सार:-

भारतीय संस्कृति अति प्राचीन संस्कृति है। इस प्राचीन संस्कृति में नैतिकता का बड़ा स्थान था। इस नीतिगत व्यवस्था में चलने के कारण व्यक्ति श्रेष्ठ व्यक्तित्व के धनी थे। यौगिक व्यवस्था में जीवन जीने के कारण आचरण शुद्धता थी। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण आधुनिक पीढ़ी पतन की ओर अग्रसर हो रही है यदि इसमें सुधार नहीं किया गया हो तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा समूल विनाश हो जायेगा।

आज हम अपने चारों ओर के वातावरण को देखते हैं तो समाज की अधोगति हमें देखने को मिलती है। सभी किसी न किसी दुःख से दुःखी है जिसका मुख्य कारण निजी स्वार्थ है। मन, वचन एवं कर्म में सामंजस्य नहीं है जिसके कारण सन्मनोवृत्ति, सद्बचन और सत्कर्म दुर्लभ हो गये हैं। इसके कारण आज पूरे विश्व में युद्ध का खतरा मंडरा रहा है। प्रेम, करुणा, वात्सल्य, भाईचारा, सहिष्णुता आदि सद्गुण दुर्लभ हो गये हैं। आज रक्षक ही भक्षक बन गये हैं। ऐसी दशा में वैदिक नैतिक आचरण ही इस संकट से हमें उबार सकता है। इसी के द्वारा पूरे विश्व में शान्ति एवं सद्भावना का संचार किया जा सकता है। भारतीय नैतिक आचरण में कुछ ऐसे सद्गुण हैं जो हमें पतन से रोक सकते हैं, वे हैं -

- (अ) निवृत्ति योग
- (ब) अनासक्ति योग
- (स) निष्काम योग

इसका तात्पर्य यह है कि हिन्दु संस्कृति निवृत्ति प्रधान है। इसकी प्रवृत्ति भी निवृत्तिमय है। यह प्रवृत्ति में निवृत्ति की साधना है। इसकी मुक्ति इसके निवृत्ति पथ की ही अभिव्यंजक है। यही कारण है नागरिकों के

स्वार्थ अपस में नहीं टकराते। वे वित्तेष्णा, सन्तानेष्णा और लोकेष्णा आदि दोषों से दूर रहते हैं। यही निवृत्ति योग का अभिप्राय है।

अनासक्ति योग निवृत्ति योग का भी प्राण है। निवृत्ति योग से बचे दोषों को इससे समाप्त किया जा सकता है।

निष्काम योग साधक के अन्तकरण को स्वच्छ बनाता है जिससे फल की आशा के कारण उत्पन्न समस्त दोष स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं। निष्काम कर्म योगी संसार में रहते हुए संसार के दोषों से रहित रहता है।

इस प्रकार योग के आश्रय से नैतिक आचरण श्रेष्ठ बना रहता है तथा ऐसी स्थिति में तम गुण तथा रज गुण का प्रभाव समाप्त हो जाता है तथा सत्व गुण का आधिपत्य होने से श्रेष्ठ नैतिक आचरण को पनपने के लिए उचित वातावरण प्राप्त होता है जिससे अशान्ति, कलह, क्लेश आदि तत्वों का नाश हो जाता है। इसके पश्चात् भारतीय संस्कृति में वर्ण व्यवस्था एवं आश्रम व्यवस्था को अंगीकार किया गया है। वर्ण व्यवस्था द्वारा नैतिक आचरण को संयत किया गया। विभिन्न समुदाय के लोगों को उनके वर्ण के अनुसार कार्य करने की व्यवस्था होने से सभी के पास रोजगार था।

आश्रम व्यवस्था में तो सम्पूर्ण जीवन को अलग-अलग भागों में विभक्त कर नैतिकता के दायरों का विकास किया। भारतीय राजयोग ने हिन्दु संस्कृति को सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा दिया।

राजयोग के यम नियम ने सम्पूर्ण सृष्टि को नैतिक आचरण की शिक्षा प्रदान की है। वही आसन, प्राणायाम ने शारीरिक, मानसिक रूप से पुष्ट बनाया तथा प्रत्याहार द्वारा इन्द्रिय संयम की शिक्षा देकर मन को शान्त एवं एकाग्र करने में सहायक हुआ है। धारणा, ध्यान और समाधि द्वारा भी चित्त की वृत्तियों को समाप्त करने में सहायक सिद्ध हुई एवं क्लेश इत्यादि समापन हुआ तथा आसपास का वातावरण नीतिगत होने से चारों ओर सकारात्मकता का वास हो गया। नैतिक गुणों के आम जीवन में लागू करने से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो सकेगा। व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास करने में योग मार्ग ही सहायक होगा।

यही नीतिगत व्यवस्था ही हमें अन्य लोगों से श्रेष्ठतम बनाती है। हमारी यही विरासत हमें निरन्तर उच्चासीन कर रही है, जहां विश्व के अन्य देशों में माता-पिता, गुरुजनों आदि का आदर सम्मान नहीं है। शराब, नशा व्यभिचार का बोलबाला है। अन्य देशों की तुलना में भारत आज भी अपनी संस्कृति पर अडिग है। आज भी कुछ हद तक नैतिकता देखने को मिल रही है जो हमें यदि मूल्यों को बचाना है तो हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को नैतिकता का संदेश देना होगा। भारत में ही वह शक्ति है जो विश्व का प्रतिनिधित्व कर सके। इसके लिए हमें जमीन से जुड़कर अपने जीवन मूल्यों को बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहना होगा।
एतदेश पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

अन्त में यहां यह कहना भी उचित प्रतीत होता है कि भारतीय नीति विज्ञान और नीति कला निसंदेह पूर्ण है, साथ ही आत्मतत्त्व की तरह अच्छेद, अभेद, अशोध्य, अदम्य भी। परन्तु इसका लाभ तो मुख्यतः ज्ञान और आचरण से ही हो सकता है। भारत में आज भी ज्ञान-विज्ञान देखने को मिल रहा है भारतीय ब्राह्मण वेदपाणी योगाभ्यासी है। यहाँ त्याग, तपस्या, वीतराग, कर्मठता आज भी विद्यमान है। मेरा तो विश्वास है कि यदि कभी विश्व वातावरण वास्तविक नैतिक बन सका तो इसमें हिन्दु नीति विज्ञान और हिन्दु सपूतों का प्रमुख योगदान होगा।

संदर्भ ग्रंथ -

1. स्वामी निरजनानंद सरस्वती (२००५)
योगदर्शन, योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट मुंगेर (बिहार)
2. योगेश्वरानंद परमहंस (२००४) प्राण विज्ञान,
योग निकेतन ट्रस्ट, नई दिल्ली
3. योगेश्वर श्री चिदानंदजी, अध्यात्म अनुभव योग
प्रकाशन.
4. योगांक, गीता प्रेस, गोरखपुर (उ.प्र.)
5. नीतिसार अंक गीताप्रेस गोरखपुर (उ.प्र.)